

ben sein: यदा तपसि ते निष्ठा Bṛāg. P. 3, 9, 38. = व्रत H. an. HALĀJ. — c) Vollendung, Abschluss, Ende; Gipfelpunkt: कालेनाल्पेनाथ निष्ठा गतां तां सभाम् MBh. 2, 1984. सेतुः स्वल्पेन कालेन निष्ठा प्राप्ता ऽभवत्तदा R. 5, 98, 40. तेषां (मन्त्राणां) निष्ठा तु विज्ञेया विद्वद्भिः सप्तमे पदे M. 8, 227 (vgl. MBh. 7, 2149. HARIV. 736). यदि वः प्रुत्कतो निष्ठा न पाणिग्रहणा- तथा MBh. 13, 2446. 2448. निष्ठाकरं प्रुत्कम् 2434. वार्ता निशम्य तां रा- ज्ञा तन्निष्ठान्वेषको ऽभवत् RĀGA-TAR. 5, 86. विविधेषु यदा निष्ठा ज्ञानेषू- पज्ञगाम सः R. GORR. 4, 80, 13. MĀRK. P. 28, 16. निष्ठा ज्ञानस्य या परा BHAG. 18, 50. तथायमपि कृतकर्तव्यः संप्रति परमामुपशमनिष्ठा प्राप्तः PRAB. 5, 15. निष्ठा न यतो यावत् R. 3, 9, 18. तथा स्वर्गश्च भागाश्च निष्ठा या च म- नीषिता MBh. 13, 307. Bṛāg. P. 8, 12, 38. 6, 3, 14. HARIV. 8464. fgg. Am Ende eines adj. comp.: अत्यात्रुर्भविषि मरुतामप्यपधंशनिष्ठा endet mit einem Fall ad ÇĀR. 78. = निष्पत्ति AK. 3, 4, 10, 43. H. an. MED. 1b. 6. = निर्वहण AK. 1, 1, 7, 15. H. 1514. MED. = निर्वह H. an. = अवसान HALĀJ. = उत्कर्ष H. an. HALĀJ. — d) Ende so v. a. Untergang, Tod: भूमौ जायति पुरुषा भूमौ निष्ठा व्रजति च MBh. 13, 3151. 1, 1938. 5, 99. RĀGA-TAR. 4, 636 (zugleich in Bed. f). यदा क्षितावेव चराचरस्य विदाम निष्ठा प्रभवं च नित्यम् Bṛāg. P. 5, 12, 8. = नाश, अन्त AK. 3, 4, 10, 43. H. an. MED. — e) vollkommenes Wissen, Gewissheit MBh. 14, 626. प्रा- णं जिह्वा च चतुश्च लक्ष्म्योत्रं बुद्धिरेव च । संशयं नाधिगच्छति मनस्तम- धिगच्छति ॥ प्राणं जिह्वा च चतुश्च लक्ष्म्योत्रं मन एव च । न निष्ठामधि- गच्छति बुद्धिस्तामधिगच्छति ॥ 665. f. g. यदा वै निस्तिष्ठत्यथ श्रद्धाति नानिस्तिष्ठच्छ्रद्धाति निस्तिष्ठन्नेव श्रद्धाति निष्ठा लेव विजिज्ञासितव्या KĀND. UP. 7, 20. निष्ठा = गुरुमुद्रापादः ÇĀṆK. — f) die Endungen त् und तवत् der Participia der vollendeten Handlung, ein solches Partici- pium P. 1, 1, 26. 2, 19. 2, 2, 36. 3, 69. 3, 2, 102. 6, 1, 22. 205. 2, 110. 169. 4, 52. 60. 95. 7, 2, 14. 47. 50. 8, 2, 42. RĀGA-TAR. 4, 636 (zugleich in Bed. d). — g) das Bitten H. an. MED. — h) Leiden, Beschwerden H. an. HALĀJ. — Nicht deutlich ist die Bed. des Wortes PAṆĀT. 1, 74.

निष्ठा (स्या mit निस्) adj. hervorragend, anführend: ज्ञाते निष्ठामद- धुर्गोषु वीरान् RV. 3, 31, 10. यूये न निष्ठा वृषभा वि तिष्ठसे 9, 110, 9. — Vgl. कर्म°, पुरु°: das f. निष्ठा s. u. निष्ठ.

निष्ठागत (निष्ठा + गत) adj. zur Vollendung gelangt, Bez. einer Art von Göttern LALIT. ed. Calc. 49, 7.

निष्ठान n. Brähe, Würze AK. 2, 9, 44. 3, 3, 10, 118. H. 399. अत्रैरपि च वार्द्धिर्निष्ठानवरसंचयैः R. 2, 91, 66. — Geht der Form nach auf स्या mit नि oder निस् zurück.

निष्ठानक m. N. pr. eines Nāga MBh. 1, 1554.

निष्ठान्त (निष्ठा + अन्त) m. Ende, Schluss: निष्ठान्तं पश्य चापि MBh. 11, 305. सुमित्रो नाम निष्ठान्त एत वार्द्धलान्वयाः Bṛāg. P. 9, 12, 15. ना- नानिर्यनिष्ठान्ता मानुषा वरुवो यदा schliesslich in mannichfache Höl- len gelangend MBh. 13, 1385.

निष्ठाव (von स्या mit निस्) ad.. abschliessend, entscheidend: पितरं पु- त्रा निष्ठावो ऽवदितेत्येवाचतते AIT. Br. 5, 14.

निष्ठावत् (von निष्ठा) adj. vollendet, vollkommen, consummatus R. 5, 11, 15. die heiligen Pflichten erfüllend GORR.

निष्ठित s. u. स्या mit निस्.

निष्ठीव (von ष्ठीव् mit नि) m. das Ausspucken H. 1521 (n.). DVI- IV. Theil.

RUPAK. im ÇKDr. स° begleitet von ausgeworfenem Speichel (eine ge- sprochene Rede) HALĀJ. 1, 142. BHAR. zu AK. 1, 1, 5, 21. ÇKDr.

निष्ठीवन (wie eben) n. das Ausspucken, Auswurf AK. 3, 3, 38. GRHJA- SAṆGR. 2, 97. वातं निष्ठीवनं चैव कुर्वते चास्य सेनिधौ MBh. 12, 2038. MĀRK. P. 34, 70. पूति° Suçr. 2, 470, 19. °शराव Spucknapf Spr. 620.

निष्ठीवित (wie eben) n. dass. VARĀH. BRH. S. 52, 104.

निष्ठुर adj. f. स्या rauh, hart, roh AK. 3, 2, 25. H. 1386. HĀR. 253. श- ङ्ख Spr. 114. von Personen MBh. 3, 386. 1245. 12, 2704. Suçr. 2, 533, 7. MRĀKH. 86, 5. प्रगल्भः स्यादनिष्ठुरः HIT. III, 101. KATHĀS. 18, 132. MĀRK. P. 16, 17. °मानस 23, 9. von Reden AK. 1, 1, 5, 19. H. 269. HALĀJ. 1, 140. वचस्तस्य वज्रनिर्घातनिष्ठुरम् ÇIVA-P. bei AUFRECHT, HALĀJ. MBh. 3, 16191. 3, 1435. परुषं ये न भाषते कुरुवं निष्ठुरं तथा 13, 6645. R. 2, 98, 15. R. GORR. 1, 64, 16. गिरा दारुणनिष्ठुराक्षराः 2, 62, 43. Suçr. 1, 103, 8. KĀM. NĪTIS. 5, 41. RĀGA-TAR. 4, 224. निष्ठुराण्यपि च ब्रुवन् Spr. 178. PAṆĀT. 171, 10. निष्ठुरतैर्वचनैः 207, 15. संरब्धकृत्तिपकनिष्ठुरचोदनाभिः (nach der Les- art des Schol.) Çiç. 3, 49. harte Worte ausstossend KATUĀS. 11, 22. 18, 108. — व्यवसायः प्रतिपत्तिनिष्ठुरः RAGH. 8, 64. शस्त्रव्यवहारनिष्ठुरे वि- पत्तभावे 3, 62. धनैः PAṆĀT. II, 123. हिंसा भवतु ते बुद्धिरेतासु कुरु निष्- रुम् BHATTI. 20, 3. schamlos HĀR. — Wird auf स्या zurückgeführt; vgl. निष्ठुरिन्.

निष्ठुरक (von निष्ठुर) m. N. pr. eines Mannes KATUĀS. 10, 21.

निष्ठुरता (wie eben) f. Rohheit, Härte, Derbheit, Grobheit M. 10, 58. Spr. 275. PAṆĀT. V, 73. DEV. 1, 23. समर° 4, 21. निष्ठुरत्व n. dass. KĀU- RAP. 48.

निष्ठुरिक (wie eben) m. N. pr. eines Nāga MBh. 5, 3628.

निष्ठूत (AK. 3, 2, 37. JĀṬN. 2, 213. RAGH. ed. Calc. 2, 75) und निष्ठूति (AK. 3, 3, 38) falsche Lesarten für निष्ठूत (s. u. ष्ठीव्) und निष्ठूति.

निष्ठूरिन् adj. wohl roh, grob MBh. 3, 1369. 2720. — Vgl. निष्ठुर, स्यू- रिन्, स्थूल.

निष्ठेव (von ष्ठीव् mit नि) m. f. (nach Einigen auch n.) das Aus- spucken AK. 3, 3, 38. स° (vgl. u. निष्ठीव) 1, 1, 5, 21.

निष्ठेवन (wie eben) n. dass. AK. 3, 3, 38.

निष्ठूति (wie eben) f. dass. AK. 3, 3, 38. निष्ठूति COLEBR. und LOIS.; die richtige Form haben ÇKDr. und WILS. (in der zweiten Aufl.)

निष्ठ (von स्ना mit नि) adj. geschickt, erfahren H. ç. 90. अतिथ्य° BHATTI. 2, 26. अ° R. 3, 17, 29. — Vgl. निष्ठ, नदीष्ठ und निज्ञात u. स्ना.

निज्ञात s. u. स्ना mit नि.

निष्ठेष्ठा (von पृच् mit निस्) adj. gar gekocht AK. 3, 2, 45. H. 1486. TS. 6, 1, 4, 4. ÇĀT. Br. 6, 3, 4, 1.

-निष्पङ्क (निस् + पङ्क) adj. f. स्या frei von Schlamm, — Schmutz, rein: सलिल MBh. 2, 89. 6, 295. 13, 3822. मास 5, 4829. आकाश इव निष्पङ्को नरेन्द्रः R. 2, 34, 9.

निष्पतन (von पत् mit निस्) n. das Hinansstürzen, rasches Hinans- laufen R. 4, 18 in der Unterschr.

निष्पताक (निस् + पताक) adj. ohne Fahne: °ध्वज JUKTİKALPAT. im ÇKDr.

निष्पत्तिष्णु (von पत् mit निस्) adj. hinausstürzend: इन्द्रियाणि प्रमा- द्योनि बुद्ध्या संयम्य यत्नतः । सर्वतो निष्पत्तिष्णुनि पिता बालानिवात्मज्ञा- न् ॥ MBh. 12, 9040.